

प्राकृत भाषा चक्रवर्ती आचार्यश्री वसुनंदी मुनि महाराज द्वारा विरचित
अभिनव सिद्धचक्र महार्चना - निर्मल भावों की सरिता

- डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़

कर्ममल कलंक से निष्कलंक आत्मा सिद्ध परमेष्ठी हैं। उन सिद्ध परमेष्ठी के गुणगान करने से और उनकी आराधना करने से हम भी सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी भावों की भावांजलियों को लेकर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन करते हैं और अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी भगवान की महार्चना करते हैं। श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान की रचना संस्कृत भाषा में अत्यंत भावों को विभोर करने वाली है, उसी सिद्धचक्र महामण्डल विधान की अर्चना हम हिन्दी भाषा में पंडितश्री संतलाल जी द्वारा रचित रचना के रूप में करते हैं। इसकी महिमा अचिंतन्य है। इसी क्रम में, प्राकृत मार्तण्ड, बहुभाषाविद्, ज्ञान-ध्यान-तपोरक्तः, न्यायकला में निपुण आचार्यप्रवर श्री 108 वसुनंदी मुनि महाराज द्वारा सिद्धचक्र महार्चना की रचना की गई है। जो कि संतप्त जनों के लिए शीतलता प्रदान करने वाली है।

आचार्यश्री ने प्राकृत भाषा में ही सिद्धभक्ति की रचना की। इसे पुस्तक के प्रारंभ में लिखा गया। तत्पश्चात् चैत्यभक्ति और पंच महागुरुभक्ति की भी प्राकृत भाषा में रचना आपके द्वारा ही गई। इसकी जो चूलिका है, वह पूर्ववत् ही है। इससे आचार्यश्री की नवीन रचना के साथ-साथ महान् आचार्यों की लेखनी के प्रति कृतज्ञता और लघुता का भाव प्रकट रूप से स्पष्ट झलक रहा है।

हम पंडितश्री संतलालजी के सिद्धचक्र महामण्डल विधान को करते हैं जिसमें $8+16+32+64+128+256+512+1024=2040$ अर्घ्य हैं। आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज ने $24+48+61+92+123+148+260+576=1332$ अर्घ्य दिए हैं। इसमें पूज्यश्री ने आठ कोष्ठों पर 1332 अर्घ्य समर्पित करने के लिए आठ पूजाएं दी हैं। बहुत ही व्यवस्थित रूप से सिद्ध भगवान के विविध गुणों को पृथक्-पृथक् रूप से गाया है। जिसमें

क्रम से देखें - प्रथम पूजा में क्षायिक लिब्ध और वस्तुत्व आदि गुणों से युक्त 24 अर्घ्य, द्वितीय पूजा में अरिहंतों के मूलगुण 48 अर्घ्य, तृतीय पूजा में आत्मशक्ति से संयुक्तसिद्ध 61 अर्घ्य, चतुर्थ पूजा में ऋद्धियों के परमफल 92 अर्घ्य, पंचम पूजा में जीवाजीवाधिकरण से मुक्तसिद्ध 123 अर्घ्य, षष्ठम पूजा में सर्वकर्म प्रकृतियों से मुक्त 148 अर्घ्य, सप्तम पूजा में विशिष्ट व परम गुण 260 अर्घ्य, अष्टम पूजा में सिद्ध भगवान के नाम एवं अन्य विशिष्ट गुण 576; इस प्रकार से 1332 अर्घ्य में महार्चना की गई है। इसमें लगभग 66 हिन्दी छंदों का प्रयोग किया गया है। इस कृति का सम्पादन परम पूज्य मुनिश्री प्रज्ञानंद जी महाराज द्वारा किया गया है। संक्षिप्त रूप से हम यहाँ पर पूजा के वैशिष्ट्य को समझते हैं -

प्रथम पूजा की स्थापना में आचार्यश्री ने सम्पूर्ण पूजा के भावों को स्पष्ट रूप से लिख दिया है, स्थापना को ही ठीक से पढ़ने से हमें ज्ञात हो जाता है कि सिद्धचक्र महार्चना के भाव और उनका फल आराधना द्वारा हमें परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति कराने में सामर्थ रखता है। कहा है -

जैसे सुमन में सुखद सौरभ, नंद संवर्द्धित करे,
त्यों सु-मन युत भवि मनुज को तव, नाम शुभ गुण से भरे।
बहु विघ्ननाशक कार्यसाधक, नाम तव विख्यात है,
जो भव्य चित में धारता होता निरोगी गात है।३॥

चूँकि भावों की निर्मलता में आगे बढ़ते हुए आचार्यश्री ने अक्षत को समर्पित करते हुए ऐसे नवीन उदाहरणों का समावेश किया है, जो आनंदित दायक है और विषय को समझने के लिए अधिक श्रेष्ठ है। वे लिखते हैं -

श्रेष्ठ सीप के उत्तम मुक्ता, वा पूनम का चंदा।
क्षीरोदधि के धवल फेन सम, ले अक्षत आनंदा॥

द्वितीय पूजा में अरिहंत भगवान के 48 मूलगुणों का विवेचन करते हुए भावना भायी है, कि उद्देश्य तो सिद्धत्व ही है, जिसको पाना है। इसी भाव को संजोते हुए पूजन की जयमाला में आचार्यश्री लिखते हैं -

मैं रहूँ सदा तव गुण प्यासा, तव भक्त बने नित पद दासा।

जीवन में एक रहे आशा, हो मेरा सिद्ध चरण वासा।।8।।

तृतीय पूजा में आत्मशक्ति से संयुक्त सिद्ध भगवान के गुणों का गान किया है। ये गुण प्रत्येक आत्म में प्रकट हो सकते हैं, उनकी सत्ता है, बस कर्ममल कलंक से रहित होने की देरी है। इस विषय को स्पष्ट करते हुए यहाँ आचार्य भगवन् लिखते हैं -

आत्मशक्ति प्रकटाय सर्वदा, हे जिनेन्द्र तुम नित्य शर्मदा।

आप सा भविक आप भक्ति से, हो विवाह वर वाम मुक्ति से।।2।।

चतुर्थ पूजा में ऋद्धियों के फल के विषय में कहा गया है। तप बल से ऋद्धियों मुनि महाराजों को स्वयमेव प्रकट हो जाती है। मुनि महाराज के चारों ओर ऋद्धियों का वास होता है, लेकिन मुनि महाराज इन ऋद्धियों के प्रति उदासीन होते हैं, उनका कोई प्रयोजन नहीं होता है। उनके लिए उनका मोक्षमार्ग ही उपादेय है, शेष अप्रयोजनीय और अनुपादेय है। आचार्य भगवन् लिखते हैं -

पूरव भव में विनय भाव से, श्रुताभ्यास करके।

ज्ञान क्षयोपशम भव्य पावें, मिथ्या तम हरके।।

हम श्रुत का अभ्यास करें, विनय रखें जिससे हम भी सिद्ध परमेष्ठी बन सकें। ऐसी भावना समाहित करके हम अपने जीवन को कृतकृत्य बना सकते हैं।

पांचवीं में पूजन में आचार्यश्री जीवाजीवाधिकरण से मुक्तसिद्ध की चर्चा की है। इसमें 123 अर्घ्य हैं। बस यही कामना हम सिद्ध भगवान से करते हैं -

आया तव पद श्रेष्ठ जान के, एकाधार तुम्हें मान के।

भव सागर से मुझे तार दो, मेरे चित् को जिन सुधार दो॥१९॥

छट्टी पूजन में सर्वकर्म प्रकृतियों से मुक्त की आराधना की गई है। इसमें 148 अर्घ्य समाहित हैं।

जिन मुद्रा को धार, करते नित पुरुषारथ।

वंदूं श्रीमुनिराज, पाने पद परमारथ॥

चेतन शाश्वत रूप, चिन्मय गुण अविनाशी।

पंचमहागुरुदेव, भविजन स्वत्व विकासी॥

सातवीं पूजन में सिद्ध परमेष्ठी के विशिष्ट गुणों की चर्चा है। इसमें 260 अर्घ्य हैं।

वेदवासना जीत आपने, कामदेव को मारा।

निज आतम का वैभव निज में, प्रकट किया है सारा॥

स्वातम वैभव पाने को हम, तव पद शीश झुकाएँ।

जिनपद पद्म पुष्प पर अलिवत्, नित्य नित्य मंडराएँ॥

आठवीं पूजन में सिद्ध परमेष्ठी के विविध नामों और अन्य श्रेष्ठ गुणों की चर्चा की है। इसमें 576 अर्घ्य हैं।

मिथ्यात्रय के वशीभूत हो, जीव लोक में भटका,

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित को, धार कर्म को झटका।

शुभ शुभतर शुभतम व क्रमशः शुद्ध भाव भवि करके,

नित्य निरंजन पंचम गति को, प्राप्त किया विधि हरके॥१॥

इस प्रकार से आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज ने श्री सिद्धचक्र महार्चना के माध्यम से सिद्ध परमेष्ठी भगवान की महान् आराधना करके स्व-पर दोनों के कल्याण के उपक्रम को साधा है। हम धन्य हैं! ऐसे पूज्य गुरुदेव हैं, जिनकी लेखनी जिनवाणी का नीर टपकता है, हम अपनी पात्रता से जितना ग्रहण करना चाहे, कर सकते हैं। मैं तो कहूँगा कि हम जिनवाणी के इस अमृत-नीर को पीकर सिद्धत्व-अमरत्व को प्राप्त करना चाहिए।